

वर्तमान संदर्भ में ऊना जनपद के गीतों में संचार माध्यमों की भूमिका

Mamal Dhiman^{1*} Dr. Parmanand Bansal²

¹ Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summer Hill Shimla-5

² Professor, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summer Hill Shimla-5

शोध सारांश:- संचार माध्यम से आशय हैं संदेश के प्रवाह में प्रयुक्त किए जाने वाले माध्यम। संचार के बिना व्यक्ति का जीवन असंभव है। किसी भी सूचना, विचार व भावों को दूसरों तक पहुँचाने के साधन हैं संचार माध्यम। वर्तमान समय में जिस प्रकार सर्व सुलभ हुआ है उसका मूल कारण संचार माध्यमों की भूमिका रही है। इनके सहयोग द्वारा हर क्षेत्र, हर समुदाय, हर जाति के व्यक्ति को संगीत जगत को निकटता से जानने के अवसर प्राप्त हुये हैं। संगीत के विकास में संचार माध्यमों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संचार माध्यमों के सहयोग से संगीत को नित नवीन दिशाएं प्राप्त होती रही हैं। संचार माध्यमों द्वारा किसी क्षेत्र का संगीत भी लोक में न रहकर देश-विदेश तक प्रचलित होता जा रहा है। ऊना जनपद के गीतों के प्रचार-प्रसार में प्रिंट व इलैक्ट्रोनिक माध्यमों का पूर्ण सहयोग रहा है है जिसमें पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टीवी व इन्टरनेट जैसे विकसित संचार माध्यमों का बहुत योगदान रहा है। वर्तमान समय में ऊना जनपद के लोक कलाकर इन माध्यमों द्वारा अपने लोक संगीत का प्रचार कर रहे हैं। संचार माध्यमों द्वारा मंच प्रदर्शन के सीधे प्रसारणों को व्यक्ति घर पर बैठ श्रवण कर सकता है। जहाँ पहले कला की प्रस्तुति प्रत्यक्ष रूप में होती थी वही आज हर व्यक्ति मोबाइल, इन्टरनेट व कम्प्यूटर का प्रयोग करके लोक संगीत का अनुसरण कर सीख सकता है। इन संचार माध्यमों द्वारा नई पीढ़ी को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। आज ऊना जनपद का कोई भी ऐसा गायक कलाकर नहीं होगा जो संचार माध्यमों से जुड़ा ना हो। गीतों की रिकॉर्डिंग से लेकर सुनने तक इन्टरनेट की सहायता से लोक संगीत देश-विदेश तक विस्तृत हो रहा है जिससे आने वाली भावी पीढ़ी ऊना जनपद के लोक संगीत की तरफ आकर्षित और प्रभावित हुई है। संचार माध्यमों ने लोक संगीत जगत में क्रान्ति का विस्तार किया है। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि संचार माध्यम संगीत जगत में बहुत बड़ी उपलब्धि है। ऊना जनपद के सांस्कृतिक गीतों, धार्मिक गीतों से लेकर नृत्य गीतों तक का विवरण इंटरनेट की सुविधा से व्यक्ति कभी भी किसी भी स्थान पर ले सकता है।

कुंजी शब्द – संचार माध्यम, लोकसंगीत, लोकप्रियता, ऊना जनपद के गीत।

वर्तमान समय में मानव जीवन से सम्बन्धित हर क्षेत्र को प्रभावित करने वाले संचार माध्यमों की महिमा-मंडित करना सूरज को दिया दिखाने जैसा होगा। आज संचार माध्यमों की संगीत के क्षेत्र में अतुलनीय भूमिका रही है।

वर्तमान के नए अविष्कारों में संचार माध्यमों ने सम्पूर्ण समाज में व्यापक प्रभाव डालकर गायन के क्षेत्र को जनसाधारण के जीवन का महत्वपूर्ण अंग बनाया है। आज हर व्यक्ति की सम्पूर्ण दिनचर्या में अनृवरत् गायन विद्याओं की मधुर गूँज किसी न किसी रूप में सुनाई पड़ती रहती है। इस गूँज का माध्यम कुछ भी हो सकता है। व्यक्तिगत जीवन का कोई भी

पहलू, कार्य, उत्सव एवं समारोह हो ‘गीत’ हमेशा आकाश की धुंध की भान्ति फैले रहते हैं। जिस संगीत का उद्घव मंत्रोचारण के लिए हुआ था आज संचार माध्यमों के सहयोग से संगीत शिक्षण संस्थाओं से लेकर मंच प्रदर्शन के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है।

वर्तमान ऊना जनपद में गीतों के कई रूप व्यापक सामने हैं जैसे लोकगीत, सांस्कारिक गीत, पार्वत संगीत, समूह गान पंजाबी गीत एवं गाथा गीत एवं नाट्य गायन इत्यादि जैसे क्षेत्रों में गीत के जो भी रूप उजागर हो रहे हैं यह केवल संचार माध्यमों द्वारा ही सम्पन्न हो पाया है। आज मंच

प्रदर्शन के साथ-साथ गीतों को सीखने एवं सुरक्षित रखने की तकनीकों में भी परिवर्तन आया है। संचार माध्यमों द्वारा गायक-वादकों की सुविधाएँ भी हुई हैं।

संचार एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। संचार मानव के स्वभाव का अभिन्न अंग है। मनुष्य द्वारा शब्द संगीत, हाव-भाव इत्यादि रूपों से होने वाली सम्प्रेषण प्रक्रियाएँ भी संचार का अंग है।” संचार समाज की आधारभूत आवश्यकता एवं जीवन की धुरी है।

जीवन में सांस्कृतिक, आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था का तानाबाना संचार माध्यमों द्वारा ही सुव्यवस्थित है। संचार माध्यम समाज की प्रगति के साथ-साथ लोक संस्कृति के विकास के माध्यम भी हैं। संचार माध्यमों की उपयोगिता एवं भूमिका प्रत्येक क्षेत्र एवं पक्ष में अलग-अलग होती है।

1. प्रिंट माध्यम - चित्र, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें इश्तेहार आदि।
2. इलैक्ट्रोनिक माध्यम - रेडियो, टीवी, कम्प्यूटर, इन्टरनेट इत्यादि।

परम्परागत संचार माध्यमों के तौर पर नाटक, स्वांग इत्यादि के द्वारा कला का प्रसार किया जाता था परन्तु वर्तमान समय में संचार के तरीके भी परिवर्तित हो गए हैं। ऊना जनपद में जहां पहले मेलों, त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर लोगों की सामूहिकता दिखाई देती थी उस सामूहिकता की जगह पार्टीज, बर्थडे पार्टी, बैंडिंग डीजे पार्टीयों ने ले लिया है। आजकल लोक गायकों ने इन्टरनेट की सहायता से स्वयं को यूट्यूब और साईट्स रजिस्टर करवा रखी है जिसके द्वारा ही विभिन्न-विभिन्न गायकों को श्रोताओं द्वारा कार्यक्रमों के लिए आमन्त्रित करने या गीतों के लिए।

संचार का शाब्दिक अर्थ है कि किसी व्यक्ति विशेष के विचार संस्कृति, साहित्य, कला और संगीत से सम्बन्धित जानकारियों को दूसरे वर्ग, प्रान्त, देश इत्यादि तक पहुंचाना। वर्तमान ऊना जनपद के गीत, व्यक्तिगत समाज की कलात्मक उपलब्धियों और सांस्कृतिक परम्पराओं के मूर्तमान परिचायक व प्रतीक है। ऊना जनपद के गीतों में व्यक्तिगत लोकसांस्कृतिक साहित्य का समावेश है इसलिए आज गीत हर व्यक्ति के जीवन का आत्मिक उल्लास के साथ-साथ आन्तरिक मनोभावों की अभिव्यक्ति के माध्यम बन गए हैं। वर्तमान समय में जिस तरह से गीत हर व्यक्ति के लिए सर्व सुलभ हुए हैं उनका मूल कारण संचार माध्यमों की भूमिका रही है। गीत जनसाधारण के जीवन का वह धागा है जिसके बिना उसका जीवन सत् एवं चित्-

का अंश होते हुए भी आनन्द से परे हैं। गीत अपने भीतर केवल लोक संस्कृति ही संजोए नहीं रखते, अपितु व्यक्ति के आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति करने के भी सर्वश्रेष्ठ सापेक्ष गुण रखते हैं। वर्तमान समय की मांग ने संगीत को विशेष महत्त्व प्रदान की है।

वर्तमान जीवन संचार माध्यमों से पूरी तरह प्रभावित है फिर चाहे संगीत का क्षेत्र क्यों न हो। संचार माध्यमों की रूपरेखा समय-समय पर परिवर्तित होती रही है। प्राचीन समय में व्यक्ति गायन विद्याओं को जीवान्त रूप में जीते थे तत्पश्चात् गीत की दुनिया में थोड़ा बदलाव आया एवं ग्रामोफोन रिकार्ड्स इत्यादि द्वारा श्रोता अपने पसंदीदा गायकों के गीतों को सुनने लगे, ऐसे ही दिन-प्रतिदिन संचार माध्यमों ने उन्नति करते हुए वर्तमान में कदम रखा, जिसमें वैज्ञानिक तकनीकों ने जन्म लिख और जिनकी सहायता से व्यक्ति ने गायन-वादन का भरपूर आनन्द उठाने अथवा व्यक्तिगत मनोरंजन के लिए रेडियो (आकाशवाणी), ऑडियो/वीडियो प्लेयर, सीडी/डिस्क, कम्प्यूटर एवं मोबाईल जैसे ऐसे असंख्य माध्यम बनाए इन माध्यमों द्वारा आज व्यक्ति विश्व के किसी छोर पर बैठ कर अपनी लोक संस्कृति एवं लोकगीतों से जुड़ सकता है। यही कारण है कि ऊना जनपद के गीतों की लोकप्रियता एवं सफलता में प्रचलित संचार माध्यमों का विशेष योगदान रहा है क्योंकि यह सत्य बात है कि कला अपनी सफलता की ऊँचाईयों को तभी छू सकती है जब कला को परिचित एवं प्रचलित करने के लिए सफल माध्यम विद्यमान हो।

वह संचार माध्यम ही तो हैं जिसके द्वारा परम्परागत गीतों की सुंदरता और वास्तविकता को जन-जन के अंतः पटल पर अंकित कर उन्हें अमर किया जा रहा है। वर्तमान यांत्रिक उपकरणों के योगदान से गीत व्यक्ति के जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं। यही कारण है कि ऊना के लोग कार्य करते समय भी गीतों को सुनना एवं गुनगुनाना पसंद करते हैं। जहां अन्य कोई भी कला सफल नहीं होती वहां संगीत कला का प्रयोग किया जाता है। गीत बिना कहे ही सब कह देते हैं अर्थात् गीत के अर्थ समझे बिना ही व्यक्ति गीत की गहराईयों में छुपे भावों को समझा जाते हैं, इसलिए आज हर व्यक्ति के दिलो-दिमाग में संगीत ने गहरी छाप छोड़ दी है। संचार माध्यमों के दृश्य-श्रव्य यांत्रिक उपकरणों के सहयोग से ऊना जनपद के गीतों को नवीन दिशाएँ मिली हैं इसलिए यह कहना अनुचित नहीं कि वर्तमान गीतों की लोकप्रियता एवं सफलता का श्रेय संचार माध्यमों को जाना चाहिए। संचार के सभी माध्यमों ने एक ओर नवोदित

कलाकारों, वरिष्ठ कलाकारों और विद्वानों को अपनी कला प्रदर्शन के अवसर प्रदान किये हैं दूसरी तरफ संगीत प्रदर्शन हेतु उचित पारिश्रमिक प्रदान करके आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी दिये हैं।

प्रचार-प्रसार के संचार माध्यमों ने संगीत की दुनिया को इतना छोटा बना दिया है कि आज कोई भी व्यक्ति, किसी भी स्थान पर रहकर लोकगीतों का आनन्द उठा सकता है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में भी गायन के प्रति लोगों की तुच्छ एवं संकीर्ण मनोवृत्ति में बदलाव आया है। युवा पीढ़ी का गायन के प्रति प्रेम व रुझान बढ़ने लगा है। कहने का भाव यह है कि ऊना जनपद में गीतों की क्रान्ति केवल संचार माध्यमों की सहायता से सम्भव हो पायी है। रेडियो, टी०वी० के हिम-टी, हिमाचल-24, लोकल चैनल, कम्प्यूटर, सी०डी०/डी०वी०डी० प्लेयर/समाचार पत्र, पत्रिका, पुस्तकें इत्यादि संचार माध्यमों द्वारा गीतों का रसवादन करना आसान हो गया है। आज श्रोता का भी गायन से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। संचार माध्यमों द्वारा संगीत सीखना, पार्श्व गायन, गीत रचना के साथ लोकगीतों को सुरक्षित रखने की तकनीकें भी सुलभ हो गई हैं। ऊना में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों को दृश्य-श्रव्य माध्यमों द्वारा दिखाया एवं सुनाया जाता है जिसके कारण आम व्यक्ति भी गीतों की तरफ आकर्षित होते हैं। ऊना जनपद में विशेषकर नृत्य गीतों को प्रदेशीय स्तर पर सराहा जाता है यह लोकप्रियता केवल संचार माध्यमों द्वारा ही सम्भव हो सकी है। ऊना जनपद का यह गीत हिमाचल प्रदेश से लेकर पंजाबी गीतों तक विख्यात है।

स्थायी- कृत्तेया करूं मैं तेरी रुँ

मैं सारी रात कृत्तेया करूँ

उन्तरा- माँ मेरी ने चरखा दित्ता2

कली करा दे

मैं सारी रात कृत्तेया करूँ

संचार माध्यम इस प्रकार से हैं।

रेडियो

यह एक श्रव्य माध्यम हैं, इसकी सहायता से हिमाचल प्रदेश में प्रादेशिक स्तर पर लोकगीतों भावी कलाकारों के बारे में जानकारियाँ प्रदान की जाती हैं। हिमाचल के आकाशवाणी केन्द्र हमेशा से संगीत जगत के लिए महत्वपूर्ण मंच रहे हैं। केवल संगीत कला ही एक ऐसी श्रव्य कला है जो ध्वनि में निहित हैं।

आकाशवाणी द्वारा इस श्रव्य कला के द्वारा परम्परागत गीतों को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जाता है। जनसाधारण में सांगीतिक जगृति उत्पन्न करने के उद्देश्य से आकाशवाणी केन्द्र बहुत सहायक रहे हैं। लोकगीतों के लिए रेडियो किसी वरदान से कम नहीं। रेडियो ने व्यक्ति विशेष को संगीत के पथ पर अग्रसर होने के पूर्ण अवसर प्रदान किये हैं।

गीतों के क्षेत्र में रेडियो (आकाशवाणी) ने विशेष भूतिका निभाई है। रेडियो ध्वनि को हजारों मील दूर भेज कर कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाता है। रेडियो पर प्रदेशिक एवं स्थानीय स्तर पर लोकसंगीत एवं सुगमसंगीत के प्रसारण किये जाते हैं। हिमाचल प्रदेश के आकाशवाणी केन्द्र शिमला, हमीरपुर एवं धर्मशाला इत्यादि ऊना के परम्परागत गीतों तथा लोकगायकों का सुनाया जाता है। रेडियो, गीतों के प्रासरण का एक ऐसा माध्यम है जहां पर लोकगीतों को खास तहजीब से गवाया जाता है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले गीतों को सुरक्षित रखने के बेहतर प्रयास किये जाते हैं। लोकसंगीत प्रसारणों में स्थानीय स्तर पर ऊना जनपद के लोकगीतों को संस्कार गीतों, धार्मिक गीतों, नृत्यगीतों, सुहाग व घोड़ियाँ इत्यादि गीतों को सुनाया जाता है। रेडियो को ऊना जनपद के गीतों के प्रचार का सर्वश्रेष्ठ माध्यम कहना गलत नहीं क्योंकि तकनीकी विकास के चलते रेडियों की पहंच ऊना के हर छोटे-छोटे गांव तक फैली है। यहाँ के वृद्ध लोग आज भी साथ बैठकर रेडियो द्वारा अपना मनोरंजन करते हैं।

टी०वी० एवं दूरदर्शन

वर्तमान गीतों की सफलता में दृश्य माध्यमों में टी०वी० (टेलीविजन) जन-संचार माध्यम का नाम सर्वप्रथम आता है। ऊना में स्थानीय एवं प्रादेशिक स्तर पर सम्पन्न होने वाले गायन मंच प्रदर्शनों एवं गीतों कार्यक्रमों को न्यूज 24, हिमाचल, हिम टी०वी० हिमाचल एवं दिव्या हिमाचल टी०वी० जैसे लोकल चैनल्स पर दिखाया जाता है। साथ ही आयोजित सभी कार्यक्रमों को वीडियो रिकॉर्डर में रिकॉर्ड करके हमेशा के लिए सुरक्षित भी रखा जाता है। इलैक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों की सहायता से आज प्रत्येक कार्यक्रमों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में देख सुनकर आनन्द उठा सकते हैं। टी०वी० संचार का सबसे प्रशावशाली माध्यम कहलाता है क्योंकि टी०वी० पर श्रव्य ध्वनि के साथ-साथ दृश्य को प्रत्यक्ष रूप में दिखाया जाता है जिसके कारण देखने वाले दर्शकों पर गायकी का सीधा प्रभाव पड़ता है।

ऊना में टी०वी० की वर्तमान स्थिति देखें तो यहाँ केबिल टी०टी०एच० एवं टाटा स्काइ इत्यादि धारकों की सुविधाएँ

मौजूद है जिनके सहयोग से गायन वादन के राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों का प्रसारण होता है और हिम टी०वी० हिमाचल तथा ऊना न्यूज 24 चैनल्स द्वारा स्थानीय एवं प्रादेशिक स्तर पर सम्पन्न होने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लोककलाकृतियों का प्रसारण दिखाया जाता है। दूरदर्शन के द्वारा ऐसे कई लोक सांगीतिक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है जिसमें लोकगीत, लोकनृत्य एवं लोकवाद्य वादन को प्रोत्साहन मिले। दूरदर्शन का लोक संगीत प्रसारणों से लोगों का लोक संगीत के प्रति झुकाव एवं आसक्ति के भाव उत्पन्न हुए हैं।

कैसेट रिकॉर्डर

कैसेट रिकॉर्डर का प्रयोग क्रमशः कैसेट प्लेयर एवं टेपरिकॉर्डर के द्वारा किया जाता है। ऊना जनपद के गीतों को अधिकतर 'टी-सीरीज' कम्पनी द्वारा कैसेट में रिकॉर्ड किया जाता है। कैसेट के माध्यम से गीतों का प्रचार-प्रसार किया जाता है। कैसेट के माध्यम द्वारा गीतों को जन-जन पहुंचाया जाता है। ऊना में लोकगायकों की धर्मिक एवं भक्ति गीतों की कैसेट्स प्रचुर मात्र में उपलब्ध हुई हैं जिनमें दर्वी-देवताओं के स्तुतिगान एवं भक्ति भावना गीत गाए गए हैं।

'टेपरिकॉर्डर' ऊना जनपद में काफी समय से प्रचलित संचार माध्यम के रूप में कार्यरत है। या यूँ कहें कि 20वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण उपलब्धि ने आज भी संगीत के क्षेत्र में अपनी जगह बनाए हुए हैं। गायन विद्याओं के लिए इस उपकरण का बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है विशेषकर गायक, कलाकारों के लिए कैसेट रिकॉर्डर अति आवश्यक है। आज भी कई लोग टेपरिकॉर्डर पर लोकगीतों को सुनने के शौकीन हैं।

वी०सी०फी० और वी०सी०आर०

यह संचार माध्यम भी टी०वी० की तरह दृश्य श्रव्य है इस उपकरण द्वारा विशेष विवाह शादियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की वीडियो रिकॉर्डिंग किया जाता है जिससे महत्वपूर्ण समय के सभी गीत सुरक्षित रहते हैं। यहाँ पर सभी कार्यक्रमों को वीडियो द्वारा रिकॉर्ड करके वीडियो प्लेयर द्वारा दिखाया जाता है।

सी०डी० कम्पैक्ट डिस्क

सी०डी० या कम्पैक्ट डिस्क वर्तमान समय के प्रचलित जनसंचार माध्यमों में से एक है, जो एक दृश्य श्रव्य माध्यम है इसके माध्यम से लोकगायक कलाकार अपनी गीत विद्याओं की सी०डी० बनाकर गीतों का प्रचार करते हैं। यह एक आधुनिक तकनीक है जिसे सी०डी० के अलावा कम्प्यूटर में लगा के भी देख सुन सकते हैं। इसमें लोकगीतों की ध्वनियों को भी कई

वर्षों तक सुरक्षित रखकर उन्हें मधुर एवं सूक्ष्मताओं के साथ स्पष्ट सुना जा सकता है। अतः जनपद में गीतों की प्रचार-प्रसार में सी०डी० एवं कम्पैक्ट डिस्क जैसे संचार उपकरण माध्यमों का भी विशेष स्थान हैं।

इन्टरनेट

इन्टरनेट वर्तमान समय का सबसे प्रभावशाली संचार माध्यम है आज विभिन्न वेबसाइट्स के माध्यम से किसी भी कोने में संगीत का आनन्द उठा सकते हैं। कितने ही दुलभी गीत हैं गूगल या यूट्यूब के माध्यम से ऐसे सभी गीतों को सुनना देखना अत्यन्त सुलभ हो गया है। गीतों के प्रचार-प्रसार की सबसे बड़ी क्रान्ति इन्टरनेट ही है जिसने सभी संचार माध्यमों को पीछे छोड़ दिया है। वर्तमान समय में इन्टरनेट के माध्यम से सांगीतिक कार्यक्रमों का प्रचार आसानी से सम्भव हो गया है। ऊना जनपद के सभी लोग इन्टरनेट सुविधाओं से जुड़े हुए हैं। इन्टरनेट के माध्यम से ऊना जनपद के लोकगायकों को भी लोकप्रियता मिली है। वर्तमान समय में बुजुर्गों द्वारा गाए हुए परम्परागत गीतों को भी इन्टरनेट पर डाउनलोड कर दिया जाता है जिन्हें कभी भी सुन सकते हैं। आज गीतों में प्रयुक्त लोकवाद्यों की जानकारी एवं वादन के तरीकों से भी इन्टरनेट माध्यम द्वारा अवगत कराया जाता है। संगीत शिक्षण को सर्वस्वापी बनाने के लिए इन्टरनेट संचार माध्यम जन उनके गीतों को सुनना देखना काफी सुलभ हो गया है। लोक गीतों के प्रचार में शायद ही सबसे बड़ी क्रान्ति है इन्टरनेट ने सभी संचार माध्यम को पीछे छोड़ दिया है। इन्टरनेट के माध्यम से सांगीतिक कार्यक्रमों का प्रचार बहुत आसानी से सम्भव हो गया है। जनपद के अधिकतर लोग इन्टरनेट सुविधाओं से जुड़े हुए हैं। इन्टरनेट के माध्यम से ऊना जनपद के लोकगायकों को भी लोकप्रियता मिली है। वर्तमान समय में बुजुर्गों द्वारा गाए हुए परम्परागत गीतों को भी इन्टरनेट पर डाउनलोड कर दिया जाता है जिन्हें कभी भी सुन सकते हैं। आज गीतों में प्रयुक्त लोकवाद्यों की जानकारी एवं वादन के तरीकों से भी इन्टरनेट माध्यम द्वारा अवगत कराया जाता है। संगीत शिक्षण को सर्वव्यापी बनाने के लिए इन्टरनेट संचार माध्यम जन साधारण के लिए अद्भुद देन है। इन्टरनेट पर ऐसे विभिन्न प्रकार के ऐप (App) हैं, जिनके द्वारा अपने गीतों को रिकॉर्ड एवं अपलोड करके संगीत प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया जा सकता है। आज लोकगायक को इन्टरनेट के माध्यम से अपने गायन के व्यवहारिक एवं क्रियात्मक पक्ष के स्थायित्व के साथ-साथ सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। इन्टरनेट के द्वारा

गायन सीखने, गीत रचना के तत्वों की जानकारियां, वाद्य यंत्रों को सीखने के तरीके एवं कंठ साधना के विशेष तत्वों को सीखना आसान हो चुका है। ऊना में जैसे-जैसे संचार माध्यमों में विकास होता आया है वैसे-वैसे संगीत से जुड़े लोककलाकारों की कलाओं को भी अधिक सफलता हासिल हुई है।

निष्कर्ष

वर्तमान संदर्भ में ऊना जनपद के गीतों कके प्रचार-प्रसार में जनसंचार माध्यम समय के कारण ही लोकगीतों को लाखों लोगों तक पहुंचा कर गीतों को नवीन दिशा की तरफ अग्रसर भी किया है। अतः यह स्पष्ट है कि संचार माध्यमों द्वारा ऊना जनपद के गीतों की गहराई एवं अध्यत्मिकता को जन-जन तक पहुंचाने में सफलता हासिल की ही है साथ ही परम्परागत गीतों को लेकर नई पीढ़ी के सांगीतिक शिक्षण एवं जिजासा की पूर्ति करके रोजगार प्राप्त हेतु विभिन्न व्यवसायिक तेयार कर दिए हैं। जहां एक ओर आधुनिक संचार माध्यमों ने ऊना जनपद के इस बदलते परिवेश में गीत, संगीत पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। वहीं दूसरी ओर आज की युवा पीढ़ी अपनी परम्पराओं को भी भूलती जा रही है। परम्परागत गीतों की सुरीली धुनों से मानव मन तो मन्त्रमुग्ध होता ही है, साथ पशु-पक्षी भी इन धुनों पर नाच उठते हैं परन्तु आज समय कुछ और है आज की भागम-भाग जिन्दगी में वैज्ञानिक उपकरणों की तीव्र ध्वनि से उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण से कई भंयकर बिमारियों से ग्रसित होते जा रहे हैं।

वर्तमान समय में संचार माध्यमों के कारण गीतों का जो प्रचार-प्रसार हो रहा है निःसंदेह प्रशंसनीय है। इन सभी माध्यमों से ऊना जनपद के गीतों को लोग जान पाए हैं तथा गीत हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर पाए हैं। अतः यह कह जा सकता है कि आज गायन का प्रचार अधिक सरलता से हो रहा है और संगीत की नई दिशाएं खोल रहे हैं। वर्तमान समय में इलैक्ट्रोनिक संचार माध्यमों ने संगीत की काया कलप दी है “ऊना जनपद में उत्सव, सावन तीज बैसाखी इत्यादि पर लोक गायकों की बुलाया जाता है तथा सांगीतिक प्रतियोगिताएं भी कराई जाती हैं जिन्हें विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों द्वारा जलोगों तक पहुँचाया जाता है। प्रतिवर्ष महाविद्यालयों द्वारा युवा संगीत उत्सव में शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय पक्षों को जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएं सम्पन्न कराई जाती हैं जिनमें गीत, लोक गीत, सुगम संगीत, पॉप एवं वाद्य वादन इत्यादि विद्याओं को संचार माध्यम द्वारा प्रसारित किया जाता है।

संदर्भ पुस्तक एवम् ग्रन्थ

2. ओमप्रकाश सिंह - संचार माध्यमों का प्रभाव
3. हिन्दुस्तानी संगीत में परिवर्तनशीलता
4. इन्टरनेट

Corresponding Author

Mamal Dhiman*

Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summer Hill Shimla-5

1. लक्ष्मी नारायण गर्ग - संगीत निबन्ध

Mamal Dhiman^{1*} Dr. Parmanand Bansal²